पाठयपुस्तक - आरोह (गद्य खंड)

10. महादेवी वर्मा (भक्तिन)

1. 'भक्तिन ने महादेवी वर्मा को अधिक देहाती बना दिया किन्तु स्वयं शहर की हवा से 44 दूर रही ।" इस वाक्य कीसत्यता सिद्ध कीजिए । (RBSE 2015)

Ans.

प्रसंग:

यह वाक्य महादेवी वर्मा के आत्मकथा "मेरी कहानी" से लिया गया है। इस वाक्य में महादेवी वर्मा ने अपनी सेविका भक्तिन के प्रभाव पर प्रकाश डाला है।

सप्रसंग व्याख्या:

महादेवी वर्मा एक उच्च शिक्षित और शहरी महिला थीं। वे शहरी संस्कृति और रीति-रिवाजों से परिचित थीं। लेकिन जब उनकी सेविका भक्तिन उनके घर में आई, तो उसने महादेवी वर्मा के जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव ला दिया।

भक्तिन एक देहाती महिला थी। वह ग्रामीण संस्कृति और रीति-रिवाजों से परिचित थी। उसने महादेवी वर्मा को देहाती जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखाया।

महादेवी वर्मा ने भक्तिन के प्रभाव में आकर देहाती भोजन खाना शुरू कर दिया। उन्होंने देहाती भाषा और कहावतें सीख लीं। उन्होंने देहाती जीवन के प्रति एक नया आकर्षण महसूस किया।

इस तरह भक्तिन ने महादेवी वर्मा को अधिक देहाती बना दिया। लेकिन स्वयं भक्तिन शहरी हवा से दूर रही। वह हमेशा अपने देहाती वेशभूषा और रीति-रिवाजों में ही रहती थी।

व्याख्या:

इस वाक्य की सत्यता को निम्नलिखित तथ्यों से सिद्ध किया जा सकता है:

- महादेवी वर्मा ने अपने आत्मकथा में लिखा है कि भक्तिन ने उन्हें देहाती भोजन खाना सिखाया। उन्होंने देहाती भाषा और कहावतें भी सीख लीं।
- महादेवी वर्मा ने लिखा है कि भक्तिन ने उन्हें देहाती जीवन के प्रति एक नया आकर्षण महसूस कराया।

- महादेवी वर्मा की रचनाओं में देहाती जीवन के चित्रण में भक्तिन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

दूसरी ओर, भक्तिन स्वयं कभी भी शहरी संस्कृति और रीति-रिवाजों को अपनाने के लिए तैयार नहीं हुई। वह हमेशा अपने देहाती वेशभूषा और रीति-रिवाजों में ही रहती थी। वह शहरी हवा से दूर रहने का प्रयास करती थी।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भक्तिन ने महादेवी वर्मा को अधिक देहाती बना दिया, लेकिन स्वयं शहरी हवा से दूर रही।

2. महादेवी के प्रति अनमोल आत्मीयता से युक्त भक्तिन के बहाने क्या संदेश दिया गया है? (RBSE 2023)

Ans. भक्तिन महादेवी वर्मा की सेवा करने वाली एक साधारण ग्रामीण महिला थी। लेकिन वह महादेवी के प्रति इतनी आत्मीय थी कि उसने उन्हें अपना गुरु मान लिया था। भक्तिन ने महादेवी को देहाती जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखाया। उसने उन्हें देहाती भोजन खाना सिखाया, देहाती भाषा और कहावतें सिखाईं, और देहाती जीवन के प्रति एक नया आकर्षण महसूस कराया।

भक्तिन के बहाने महादेवी वर्मा ने हमें यह संदेश दिया है कि प्रेम और आत्मीयता की कोई सीमा नहीं होती। ये किसी भी सामाजिक, आर्थिक, या जातीय भेदभाव से ऊपर होती हैं।

भक्तिन एक साधारण ग्रामीण महिला थी, लेकिन उसमें प्रेम और आत्मीयता की इतनी शक्ति थी कि उसने एक उच्च शिक्षित और शहरी महिला को भी प्रभावित कर दिया। यह संदेश हमें यह भी देता है कि प्रेम और आत्मीयता का प्रभाव सभी पर समान रूप से पड़ता है।

भक्तिन के बहाने महादेवी वर्मा ने हमें यह भी संदेश दिया है कि हमें अपने आसपास के लोगों से प्रेम और आत्मीयता से पेश आना चाहिए। चाहे वह कोई भी हो, चाहे उसका कोई भी सामाजिक, आर्थिक, या जातीय समूह हो।

11. जैनेन्द्र कुमार (बाज़ार दर्शन)

3. "जो लोग बाज़ार से लाभ नहीं उठा सकते और न ही बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं, वे लोग बाज़ार का बाज़ारूपन ही बढ़ाते हैं ।" कथन का आशय स्पष्ट कीजिए । (RBSE 2013)

Ans. इस कथन का आशय यह है कि जो लोग बाजार से लाभ नहीं उठा सकते और न ही बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं, वे लोग बाजार को केवल दिखावे और उपभोक्तावाद का स्थान बनाते

हैं। वे बाजार में जाकर अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं और अनावश्यक वस्तुएं खरीदते हैं। इससे बाजार में मूल्य वृद्धि होती है, छल-कपट बढ़ता है, और शोषण की प्रवृत्ति बढ़ती है।

कवि का मानना है कि बाजार का उद्देश्य लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है। लेकिन जब लोग अपनी आवश्यकताओं को जाने बिना बाजार में जाकर अनावश्यक वस्तुएं खरीदते हैं, तो वे बाजार को केवल दिखावे और उपभोक्तावाद का स्थान बना देते हैं। इससे बाजार में बाज़ारूपन बढ़ता है।

बाज़ारूपन का अर्थ है कि बाजार केवल दिखावे का स्थान बन जाता है। लोग बाजार में जाकर अपनी क्रय-शक्ति का प्रदर्शन करते हैं, चाहे उन्हें उन वस्तुओं की आवश्यकता हो या न हो। इससे बाजार में मूल्य वृद्धि होती है, क्योंकि लोग अधिक पैसे खर्च करने के लिए तैयार रहते हैं। छल-कपट बढ़ता है, क्योंकि लोग दूसरों को ठगने के लिए तैयार रहते हैं। और शोषण की प्रवृत्ति बढ़ती है, क्योंकि लोग दूसरों का शोषण करके अपनी क्रय-शक्ति बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

इस प्रकार, कवि का कथन बाजार के बाज़ारूपन के खतरे को इंगित करता है। हमें बाजार में जाकर अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर खरीदारी करनी चाहिए। हमें अनावश्यक वस्तुओं को खरीदने से बचना चाहिए। इससे हम बाजार को एक स्वस्थ और सार्थक स्थान बना सकते हैं।

4. 'बाज़ार-दर्शन' निबन्ध के आधार पर 'बाज़ार के जादू' को स्पष्ट करते हुए इससे बचने के उपाय लिखिए । (RBSE 2015)

Ans.
बाज़ार के जादू' का अर्थ

'बाज़ार-दर्शन' निबन्ध में जैनेन्द्र कुमार ने बाजार के आकर्षण को 'जादू' की संज्ञा दी है। इसका अर्थ है कि बाजार अपनी प्रदर्शन दक्षता के कारण ग्राहकों को लुभाता है तथा उनको चीजें खरीदने के लिए प्रोत्साहित करता है। बाजार का आकर्षण अत्यन्त प्रबल होता है। उसमें पड़कर मनुष्य उन चीजों को भी खरीद लेता है, जो उसके लिए जरूरी नहीं होती।

बाज़ार के जादू के कारण

बाजार के जादू के कई कारण हैं। इनमें से कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएं उपलब्ध होती हैं, जो मनुष्य की इच्छाओं को जागृत करती हैं।

- बाजार में वस्तुओं को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया जाता है, जिससे मनुष्य उन वस्तुओं को खरीदने के लिए आकर्षित होता है।
- बाजार में वस्तुओं पर आकर्षक छूट और ऑफर दिए जाते हैं, जिससे मनुष्य उन वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रेरित होता है।

बाज़ार के जादू से बचने के उपाय

बाजार के जादू से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- बाजार जाने से पहले अपनी आवश्यकताओं का ध्यानपूर्वक विचार करें।
- बाजार में केवल अपनी आवश्यकता की वस्तुएं खरीदें।
- बाजार में वस्तुओं की कीमतों की तुलना करके ही खरीदारी करें।
- बाजार में वस्तुओं को खरीदते समय जल्दबाजी न करें।

बाजार के जादू से बचने के लिए उपरोक्त उपायों को अपनाकर हम बाजार को केवल आवश्यकताओं की पूर्ति का स्थान बना सकते हैं। इससे हम बाजार के बाज़ारूपन को भी रोक सकते हैं।

5. 'बाज़ार में एक जादू है'- इस कथन को ' बाज़ार-दर्शन' अध्याय के आधार पर उचित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए । (RBSE 2018)
Ans. **बाज़ार में एक जादू है'- इस कथन का अर्थ है कि बाजार एक आकर्षक स्थान है जो मनुष्य को अपनी ओर खींचता है। बाजार में विभिन्न प्रकार की वस्तुएं उपलब्ध होती हैं, जो मनुष्य की इच्छाओं को जागृत करती हैं। बाजार में वस्तुओं को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया जाता है, जिससे मनुष्य उन वस्तुओं को खरीदने के लिए आकर्षित होता है। बाजार में वस्तुओं पर आकर्षक छूट और ऑफर दिए जाते हैं, जिससे मनुष्य उन वस्तुओं को खरीदने के लिए प्रेरित होता है।

बाजार के जादू को निम्नलिखित उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है:

- जब कोई व्यक्ति बाजार जाता है, तो उसे विभिन्न प्रकार की वस्तुएं दिखाई देती हैं। इन वस्तुओं को देखने से व्यक्ति की इच्छाएं जागृत होती हैं। वह चाहता है कि वह उन वस्तुओं को खरीद ले।
- बाजार में वस्तुओं को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया जाता है। इससे वस्तुओं की सुंदरता और आकर्षण बढ़ जाता है। व्यक्ति उन वस्तुओं को देखकर मोहित हो जाता है और उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित होता है।

- बाजार में वस्तुओं पर आकर्षक छूट और ऑफर दिए जाते हैं। इससे वस्तुओं की कीमत कम हो जाती है। व्यक्ति उन वस्तुओं को खरीदने के लिए उत्साहित हो जाता है।

बाजार के जादू के कई दुष्परिणाम भी होते हैं। इससे मनुष्य में अनावश्यक खर्च की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। इससे बाजार में मूल्य वृद्धि होती है। और इससे बाजार का बाज़ारूपन बढ़ता है।

बाजार के जादू से बचने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं:

- बाजार जाने से पहले अपनी आवश्यकताओं का ध्यानपूर्वक विचार करें।
- बाजार में केवल अपनी आवश्यकता की वस्तुएं खरीदें।
- बाजार में वस्तुओं की कीमतों की तुलना करके ही खरीदारी करें।
- बाजार में वस्तुओं को खरीदते समय जल्दबाजी न करें।

उपर्युक्त उपायों को अपनाकर हम बाजार के जादू से बच सकते हैं और बाजार को केवल आवश्यकताओं की पूर्ति का स्थान बना सकते हैं।

6. 'जैनेन्द्र कुमार' का लेखक परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) (RBSE 2023)

Ans. जैनेन्द्र कुमार (2 जनवरी, 1905- 24 दिसंबर, 1988) हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के प्रमुख उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, नाटककार, और आलोचक थे। उन्हें हिंदी साहित्य के मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में माना जाता है।

जैनेन्द्र कुमार का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के कौड़ियागंज कस्बे में हुआ था। उनका मूल नाम आनंदीलाल था। उन्होंने हस्तिनापुर के जैन गुरुकुल ऋषि ब्रह्मचर्याश्रम में शिक्षा ग्रहण की। सन् 1919 में मैट्रिक करने के बाद उन्होंने काशी विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया किन्तु गाँधीजी के आह्वान पर अध्ययन छोड़कर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। बाद में उन्होंने स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन किया।

जैनेन्द्र कुमार ने कथा साहित्य के साथ हिंदी गद्य की अन्य विधाओं में भी लेखन किया। उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, और आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं:

- कहानी संग्रह: नीलम देश की राजकन्या, फाँसी, जय-सन्धि, वातायन, एक रात, दो चिड़िया, पाजेब
- उपन्यास: परख, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्धन, मुक्तिबोध

- निबंध संग्रह: पूर्वोदय, जड़ की बात, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच-विचार, प्रश्न और प्रश्न, काम, प्रेम और परिवार, अकाल पुरुष गाँधी
- नाटक: मंदाकिनी, पाप और प्रकाश
- आलोचना: महात्मा गाँधी का दर्शन

जैनेन्द्र कुमार को साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। उन्हें 1978 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 1984 में पद्मभूषण से सम्मानित किया गया।

जैनेन्द्र कुमार हिंदी साहित्य के एक महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को एक नई दिशा दी। उनकी रचनाओं में मनुष्य के मनोविज्ञान का गहन अध्ययन किया गया है। उनकी रचनाएँ आज भी आधुनिक हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

12. धर्मवीर भारती (काले मेघा पानी दे)

7. 'काले मेघा पानी दे' के आधार पर समझाइए कि लेखक ने भारतीयों का अंग्रेजों से पिछड़ने व उनका गुलाम बनने के क्या कारण बताए हैं । वह उस स्थिति में सुधार चाहते हुए भी क्यों नहीं कर पाता है ? (RBSE 2014)

Ans.

8. 'काले मेघा पानी दें' निबन्ध के आधार पर बताइए कि जीवन में त्याग और दान का क्या महत्त्व है ? (RBSE 2016)

Ans.

त्याग और दान का महत्त्व

'काले मेघा पानी दें' निबन्ध में लेखक ने त्याग और दान के महत्त्व को बखूबी समझाया है। लेखक के अनुसार, त्याग और दान एक ऐसी भावना है जो मनुष्य को महान बनाती है। त्याग से मनुष्य का स्वार्थ कम होता है और दान से उसका हृदय विशाल होता है।

निबन्ध में, लेखक के जीजी ने इंदर सेना के माध्यम से लोगों से पानी का दान कराया। यह दान त्याग की भावना से किया गया था। जीजी का मानना था कि जब हम अपनी सबसे प्यारी और आवश्यक वस्तु को दूसरों के लिए दे देते हैं, तो हमें उसके बदले में कुछ भी नहीं चाहिए। ऐसा दान ही सच्चे दान का रूप है।

त्याग और दान से समाज में प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना बढ़ती है। जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हम उनका दुख कम करते हैं और उनका मनोबल बढ़ाते हैं। इससे समाज में एकता और भाईचारे की भावना बढ़ती है।

त्याग और दान से मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में भी सहायता मिलती है। जब हम दूसरों की मदद करते हैं, तो हमें मानसिक शांति और सुख मिलता है। इससे हमारा मन निर्मल होता है और हम ईश्वर के करीब आते हैं।

आज के समय में त्याग और दान की भावना बहुत कम हो गई है। लोग केवल अपने स्वार्थ के लिए जीते हैं। ऐसे में हमें त्याग और दान की भावना को अपने जीवन में उतारना चाहिए। इससे हम अपने जीवन को सुखी और सफल बना सकते हैं।

निबन्ध के आधार पर त्याग और दान के महत्त्व को निम्नलिखित बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है:

- त्याग और दान से मनुष्य का स्वार्थ कम होता है और उसका हृदय विशाल होता है।
- त्याग और दान से समाज में प्रेम, सहानुभूति और सहयोग की भावना बढ़ती है।
- त्याग और दान से मनुष्य के आध्यात्मिक विकास में सहायता मिलती है।

आज के समय में हमें त्याग और दान की भावना को अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। इससे हम अपने जीवन को सुखी और सफल बना सकते हैं।

9. 'काले मेघा पानी दें' में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान का द्वन्द्व चित्रण अपने शब्दों में लिखिए । (RBSE 2023)
Ans.
लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान का द्वन्द्व

'काले मेघा पानी दें' संस्मरण में लेखक ने लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुंदर चित्रण किया है। जब वर्षा नहीं होती है, तो लोग अभावग्रस्त हो जाते हैं। पेड़-पौधे सूख जाते हैं और फसल नष्ट हो जाती है। ऐसे में लोग वर्षा होने की कामना करते हैं।

इस कामना को पूरा करने के लिए लोक प्रचलित विश्वासों का सहारा लिया जाता है। एक ऐसे ही विश्वास के अनुसार, जब इंदर सेना के लड़के बादलों से पानी मांगते हैं, तो वर्षा होती है। इस विश्वास के आधार पर, आषाढ़ के महीने में, इंदर सेना के लड़के गलियों में निकलते हैं और लोगों से पानी मांगते हैं। लोग उन्हें पानी से तरबतर कर देते हैं।

लेखक का तर्कशील मन इस विश्वास को अंधविश्वास मानता है। वह मानता है कि वर्षा होने के पीछे विज्ञान का अपना सिद्धांत है। विज्ञान के अनुसार, वर्षा तब होती है जब वायु में जलवाष्प का घनत्व बढ़ जाता है और वह संघनित होकर बादलों का रूप ले लेता है।

लेकिन, लेखक की जीजी इस विश्वास में दृढ़ हैं। वह मानती हैं कि दान और त्याग से देवता प्रसन्न होते हैं और वर्षा होती है। लेखक की जीजी की इस आस्था के कारण, लेखक भी इस विश्वास को मानने लगता है।

इस प्रकार, 'काले मेघा पानी दें' संस्मरण में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वन्द्व का सुंदर चित्रण किया गया है। इस संस्मरण से यह स्पष्ट होता है कि लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। लोक प्रचलित विश्वासों से लोगों को आशा और शक्ति मिलती है, जबकि विज्ञान से लोगों को वास्तविकता का ज्ञान मिलता है।

13. फणीश्वर नाथ रेण पहलवान की ढोलक)

10. 'पहलवान की ढोलक' नामक कहानी में 'लुट्टनसिंह' एक ऐसा पात्र है जो प्रारम्भ से लेकर मृत्यु पर्यन्त जिजीविषा का अद्भुत दस्तावेज है ।" कैसे ? समझाइए । (RBSE 2014)
Ans. हलवान की ढोलक' कहानी में लुट्टनसिंह का चरित्र जिजीविषा का अद्भुत दस्तावेज है। वह नौ वर्ष की अवस्था में माता-पिता की मृत्यु के बाद अपनी विधवा सास द्वारा पाला-पोसा जाता है। वह बिना किसी मार्गदर्शक के पहलवानी सीखता है और अपने क्षेत्र का नामी पहलवान बन जाता है। राजा की मृत्यु के बाद वह अपने गाँव लौट आता है और युवकों को कुश्ती लड़ना सिखाता है।

गाँव में महामारी फैलने पर वह ढोलक बजाकर गाँव वालों को महामारी से लड़ने की शक्ति देता है। अपने दोनों पुत्रों की मृत्यु पर भी वह हिम्मत नहीं हारता और मृत्युपर्यन्त साहस के साथ जीवन बिताता है।

लुट्टनसिंह के जिजीविषा के कुछ प्रमुख उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- माता-पिता की मृत्यु के बाद भी वह हिम्मत नहीं हारता और पहलवानी सीखकर अपने जीवन को सार्थक बनाता है।
- राजा की मृत्यु के बाद भी वह अपने गाँव में रहकर युवकों को कुश्ती लड़ना सिखाता है।
- महामारी फैलने पर वह ढोलक बजाकर गाँव वालों को महामारी से लड़ने की शक्ति देता है।
- अपने दोनों पुत्रों की मृत्यु पर भी वह हिम्मत नहीं हारता और ढोलक बजाकर गाँव वालों को धैर्य रखने के लिए प्रेरित करता है।

लुट्टनसिंह का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हर परिस्थिति में अपने साहस और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ना चाहिए।

11. 'उसने क्षत्रिय का काम किया है' राजा साहब ने ये शब्द किसके लिए और क्यों कहे हैं? पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर बताइए । (RBSE 2016)

Ans. पहलवान की ढोलक पाठ में राजा साहब ने ये शब्द लुट्टन पहलवान के लिए कहे हैं। लुट्टन पहलवान ने श्यामनगर के मेले में प्रसिद्ध पहलवान चाँदसिंह को हराकर एक ऐतिहासिक जीत हासिल की थी। इस जीत से लुट्टन पहलवान ने क्षत्रिय जाति के गौरव को बढ़ाया था। इसलिए राजा साहब ने कहा कि "उसने क्षत्रिय का काम किया है।"

क्षत्रिय जाति को प्राचीन काल से योद्धा वर्ग माना जाता है। क्षत्रिय जाति के पुरुषों को हमेशा अपने साहस, पराक्रम और शौर्य के लिए जाना जाता है। लुट्टन पहलवान ने चाँदसिंह को हराकर क्षत्रिय जाति के इन गुणों को जीवंत कर दिया था। इसलिए राजा साहब ने उसे "क्षत्रिय" कहकर संबोधित किया था।

राजा साहब का यह कथन लुट्टन पहलवान के लिए एक सम्मान था। यह कथन यह भी दर्शाता है कि राजा साहब लुट्टन पहलवान की जीत से बहुत खुश थे। वे लुट्टन पहलवान के साहस और पराक्रम को सराहते थे।

पहलवान की ढोलक पाठ से हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि हमें अपने साहस और पराक्रम से अपने देश और समाज का गौरव बढ़ाना चाहिए। हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना चाहिए।

12. ढोलक की थाप मृत गाँव में किस प्रकार संजीवनी भरती थी ? पठित कहानी 'पहलवान की ढोलक' के आधार पर लिखिए । (RBSE 2022)

Ans. पहलवान की ढोलक कहानी में लुट्टन पहलवान की ढोलक की थाप मृत गाँव में संजीवनी भरती थी। ढोलक की थाप में एक ऐसी शक्ति थी जो गाँव वालों में आशा और उत्साह भर देती थी। ढोलक की थाप सुनकर गाँव वालों के मन में यह विश्वास जागृत हो जाता था कि वे इस महामारी से लड़ सकते हैं और जीत सकते हैं।

महामारी के कारण गाँव में भय और निराशा का माहौल था। लोग अपने-अपने घरों में दुबके रह रहे थे। वे महामारी से डर रहे थे और मरने की तैयारी कर रहे थे। ऐसे में लुट्टन पहलवान ने ढोलक बजाना शुरू किया। ढोलक की थाप सुनकर गाँव वालों की निराशा दूर हो गई और उनमें साहस और उत्साह का संचार हुआ।

ढोलक की थाप ने गाँव वालों को एक साथ ला दिया। सभी लोग ढोलक की थाप पर नाचने लगे। ढोलक की थाप ने गाँव में एक नई ऊर्जा का संचार किया। गाँव वालों ने महामारी से लड़ने का संकल्प लिया।

ढोलक की थाप मृत गाँव में संजीवनी भरती थी। यह गाँव वालों को एकता, साहस और उत्साह का संदेश देती थी। यह गाँव वालों को जीवन के प्रति आशावान बनाती थी।

ढोलक की थाप से गाँव वालों को होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं:

- ढोलक की थाप से गाँव वालों में आशा और उत्साह का संचार होता था।
- ढोलक की थाप ने गाँव वालों को एक साथ ला दिया।
- ढोलक की थाप ने गाँव वालों को महामारी से लड़ने का संकल्प लेने में मदद की।
- ढोलक की थाप ने गाँव वालों को जीवन के प्रति आशावान बनाया।

14. हजारी प्रसाद द्विवेदी (शिरीष के फूल)

13. शिरीष को एक अद्भुत अवधूत क्यों कहा है ? पाठ 'शिरीष के फूल' के आधार पर समझाइए । (RBSE 2013)

Ans. शिरीष को एक अद्भुत अवधूत इसलिए कहा गया है क्योंकि वह प्रचंड गर्मी और लू में भी फलता-फूलता है। अवधूत एक ऐसा संन्यासी होता है जो सांसारिक मोह-माया से मुक्त होता है। वह काल, विषय-वासनाओं, क्रोध, मोह इत्यादि से स्वयं को अलग कर देता है। शिरीष भी इसी तरह का है। वह प्रचंड गर्मी और लू में भी अपने फूलों से सुगंध बिखेरता रहता है। वह जीवन की अजेयता का संदेश देता है।

शिरीष के अद्भुत अवधूत होने के कुछ प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं:

- शिरीष वृक्ष प्रचंड गर्मी और लू में भी फलता-फूलता है। यह गर्मी के मौसम का एकमात्र ऐसा वृक्ष है जो फूलों से लद जाता है।
- शिरीष के फूलों की सुगंध बहुत ही मनमोहक होती है। यह सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती है।
- शिरीष का वृक्ष बड़ा और छायादार होता है। यह गर्मी के मौसम में राहगीरों को छाया प्रदान करता है।
- शिरीष का वृक्ष एक प्रतीक है। यह जीवन की अजेयता का संदेश देता है।

शिरीष के वृक्ष से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हर परिस्थिति में अपने साहस और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ना चाहिए। हमें जीवन की सुंदरता को निहारना चाहिए और दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए।

14. शिरीष के वृक्ष, कबीर और कालिदास में हजारी प्रसाद जी ने क्या समानताएँ देखीं और क्यों ? (RBSE 2014)

Ans. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने शिरीष के वृक्ष, कबीर और कालिदास में मस्तमौला तथा फक्कड़ स्वभाव की विशेषताएँ देखीं। जीवन में संकटग्रस्त रहते हुए भी कबीर अपने सिद्धान्तों से विचलित नहीं हुए, कालिदास भी योगियों की भाँति मोह मुक्त रहे और शिरीष का वृक्ष भी विपरीत मौसम, लू-गर्मी में भी मस्त होकर खिला रहता है।

15. "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !" 'शिरीष के फूल' निबंध के आधार पर बताइए कि उपर्युक्त वाक्य किसके लिए व क्यों कहा गया है । (RBSE 2014)

Ans. "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है !" यह वाक्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने निबंध 'शिरीष के फूल' में महात्मा गांधी के लिए कहा है। द्विवेदी जी ने शिरीष के फूल को महात्मा गांधी के व्यक्तित्व का प्रतीक माना है। शिरीष के फूल की तरह ही महात्मा गांधी भी प्रचंड गर्मी और लू में भी अपने आदर्शों और सिद्धांतों से नहीं डिगे। उन्होंने जीवन भर अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलकर भारत को स्वतंत्रता दिलाई।

द्विवेदी जी ने महात्मा गांधी को 'कालजयी अवधूत' कहा है। अवधूत वह है जो सांसारिक मोह माया से मुक्त होता है। महात्मा गांधी भी सांसारिक मोह माया से मुक्त थे। उन्होंने कभी भी धन, पद, या शक्ति की लालसा नहीं की। वे हमेशा दूसरों की सेवा में लगे रहे।

द्विवेदी जी को महात्मा गांधी के निधन पर बहुत दुख हुआ था। उन्होंने लिखा है कि "हाय, वह अवधूत आज कहाँ है ! जो कालजयी अवधूत था, वह आज कहाँ है !"

द्विवेदी जी का यह वाक्य हमें यह शिक्षा देता है कि हमें हमेशा महात्मा गांधी के आदर्शों और सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हमेशा सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए।

16. “शिरीष के फूल ।" के माध्यम से लेखक ने सघर्ष शीलता एवं जिजीविषा की जो व्यंजना की है। उसे स्पष्ट कीजिए । (RBSE 2016)

Ans. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने निबंध "शिरीष के फूल" में शिरीष के फूल के माध्यम से सघर्षशीलता एवं जिजीविषा की व्यंजना की है।

शिरीष का वृक्ष गर्मी के मौसम में भी अपने फूलों से लदा रहता है। यह प्रचंड गर्मी और लू से भी अप्रभावित रहता है। यह अपने जीवन की रक्षा के लिए संघर्ष करता रहता है। यह अपने जीवन के प्रति जिजीविषा से भरा होता है।

शिरीष के फूल की सुगंध भी बहुत ही मनमोहक होती है। यह सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती है। यह सुगंध जीवन की सुंदरता और उत्साह का प्रतीक है। यह हमें यह शिक्षा देता है कि हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हर परिस्थिति में अपने साहस और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ना चाहिए।

शिरीष का वृक्ष एक प्रतीक है। यह जीवन की अजेयता का संदेश देता है। यह हमें यह शिक्षा देता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

शिरीष के फूल के माध्यम से द्विवेदी जी यह भी कहना चाहते हैं कि:

- जीवन में संघर्षशीलता और जिजीविषा आवश्यक है।
- जीवन की सुंदरता और उत्साह को कभी नहीं खोना चाहिए।
- जीवन की अजेयता पर विश्वास रखना चाहिए।

शिरीष के फूल का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है। हमें इस संदेश को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करनी चाहिए।

17. शिरीष के फूल नामक निबन्ध से हमें क्या शिक्षा मिलती है ? (RBSE 2017)
Ans.
शिरीष के फूल नामक निबंध से हमें निम्नलिखित शिक्षाएँ मिलती हैं:

- जीवन में संघर्षशीलता और जिजीविषा आवश्यक है।
- जीवन की सुंदरता और उत्साह को कभी नहीं खोना चाहिए।
- जीवन की अजेयता पर विश्वास रखना चाहिए।

शिरीष का वृक्ष गर्मी के मौसम में भी अपने फूलों से लदा रहता है। यह प्रचंड गर्मी और लू से भी अप्रभावित रहता है। यह अपने जीवन की रक्षा के लिए संघर्ष करता रहता है। यह अपने जीवन के प्रति जिजीविषा से भरा होता है।

शिरीष के फूल की सुगंध भी बहुत ही मनमोहक होती है। यह सुगंध दूर-दूर तक फैल जाती है। यह सुगंध जीवन की सुंदरता और उत्साह का प्रतीक है। यह हमें यह शिक्षा देता है कि हमें जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें हर परिस्थिति में अपने साहस और दृढ़ संकल्प से आगे बढ़ना चाहिए।

शिरीष का वृक्ष एक प्रतीक है। यह जीवन की अजेयता का संदेश देता है। यह हमें यह शिक्षा देता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, हमें कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए।

शिरीष के फूल का यह संदेश आज भी प्रासंगिक है। हमें इस संदेश को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करनी चाहिए।

15. बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

(1. श्रम विभाजन और जाति प्रथा, 2. मेरी कल्पना का आदर्श समाज)

18. मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर करती है ? बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के 'मेरी कल्पना का आदर्श-समाज' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [3M] (RBSE 2013)

Ans.

बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर के अनुसार, मनुष्य की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है:

- शारीरिक वंश-परम्परा
- सामाजिक उत्तराधिकार
- मनुष्य के अपने प्रयत्न

शारीरिक वंश-परम्परा का अर्थ है कि मनुष्य का जन्म किस परिवार में हुआ है। अगर मनुष्य का जन्म किसी संपन्न परिवार में हुआ है तो उसे अच्छे संसाधनों और अवसरों की प्राप्ति होती है। इससे उसका विकास हो सकता है और वह अपनी क्षमता को पूरी तरह से विकसित कर सकता है।

सामाजिक उत्तराधिकार का अर्थ है कि मनुष्य को अपने समाज से क्या मिलता है। अगर मनुष्य का जन्म किसी ऐसे समाज में हुआ है जो उसे शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर प्रदान करता है तो वह अपनी क्षमता को विकसित कर सकता है।

मनुष्य के अपने प्रयत्न का अर्थ है कि मनुष्य स्वयं अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए क्या करता है। अगर मनुष्य मेहनत करता है, अध्ययन करता है, और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है तो वह अपनी क्षमता को पूरी तरह से विकसित कर सकता है।

बाबा साहेब अंबेडकर का मानना था कि मनुष्य की क्षमता को विकसित करने के लिए सामाजिक न्याय और समानता आवश्यक है। अगर सभी को समान अवसर और संसाधन दिए जाएं तो हर कोई अपनी क्षमता को विकसित कर सकता है।

मेरी कल्पना का आदर्श-समाज पाठ में बाबा साहेब अंबेडकर ने एक ऐसे समाज की कल्पना की है जिसमें सभी को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। इस समाज में जाति, धर्म, या लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं होगा। इस समाज में सभी को शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। इस समाज में सभी को अपनी क्षमता को विकसित करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

बाबा साहेब अंबेडकर का मानना था कि अगर ऐसा समाज बन जाए तो हर व्यक्ति अपनी क्षमता को पूरी तरह से विकसित कर सकेगा और समाज का विकास होगा।

19. " आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक प्रथा है ।" क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं ? अपने विचार लिखिए । [3M] (RBSE 2015)

Ans.
हाँ, मैं इस दृष्टिकोण से सहमत हूँ कि आर्थिक पहलू से भी जाति प्रथा हानिकारक प्रथा है।

- जाति प्रथा के कारण लोगों को जन्म से ही एक निश्चित पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। इससे उनकी आर्थिक क्षमता का विकास नहीं हो पाता है।
- जाति प्रथा के कारण लोगों को शिक्षा और रोजगार के अवसरों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। इससे उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार नहीं हो पाता है।
- जाति प्रथा के कारण लोगों में हीन भावना और आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। इससे उनकी आर्थिक विकास की क्षमता कम हो जाती है।

जाति प्रथा के आर्थिक दुष्परिणामों को निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है:

- जाति प्रथा के कारण समाज में आर्थिक असमानता बढ़ती है। उच्च जातियों के लोग आर्थिक रूप से अधिक उन्नत होते हैं, जबकि निम्न जातियों के लोग आर्थिक रूप से पिछड़े होते हैं।

- जाति प्रथा के कारण समाज में आर्थिक विकास में बाधा आती है। सभी लोगों को समान अवसर मिलने पर ही समाज का आर्थिक विकास हो सकता है।
- जाति प्रथा के कारण समाज में सामाजिक तनाव और संघर्ष बढ़ता है। आर्थिक असमानता के कारण समाज में असंतोष और हिंसा फैल सकती है।

जाति प्रथा के आर्थिक दुष्परिणामों को दूर करने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जाने चाहिए:

- जाति प्रथा को समाप्त करने के लिए कानूनी और सामाजिक प्रयास किए जाने चाहिए।
- लोगों को जाति के आधार पर भेदभाव करने से रोकने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए।
- सभी लोगों को समान शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

जाति प्रथा के आर्थिक दुष्परिणामों को दूर करने से समाज में आर्थिक समानता, आर्थिक विकास और सामाजिक शांति को बढ़ावा मिलेगा।

20. "यह भी सच है कि यथा प्रजा तथा राजा ।" इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए । (RBSE 2016)

Ans . "यथा प्रजा तथा राजा" एक प्राचीन भारतीय कहावत है, जिसका अर्थ है कि "जैसी प्रजा होगी, वैसा ही राजा होगा।" इस कहावत का आशय यह है कि शासक और प्रजा के बीच एक घनिष्ठ संबंध होता है। शासक की प्रकृति और आचरण प्रजा के आचरण को प्रभावित करता है।

इस कहावत को निम्नलिखित दो रूपों में भी समझा जा सकता है:

- यदि प्रजा ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और परोपकारी है, तो शासक भी ऐसा ही होगा।
- यदि प्रजा भ्रष्ट, अविश्वासी और स्वार्थी है, तो शासक भी ऐसा ही होगा।

इस कहावत का एक उदाहरण महाभारत से दिया जा सकता है। महाभारत के युद्ध के बाद, युधिष्ठिर ने धर्म की स्थापना के लिए एक राज्य की स्थापना की। युधिष्ठिर के राज्य में प्रजा ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और परोपकारी थी। इसलिए, युधिष्ठिर एक न्यायप्रिय और धर्मनिष्ठ शासक बने।

इसके विपरीत, रावण के राज्य में प्रजा भ्रष्ट, अविश्वासी और स्वार्थी थी। इसलिए, रावण एक अत्याचारी और दमनकारी शासक बना।

आज भी यह कहावत प्रासंगिक है। एक लोकतांत्रिक देश में, शासकों का चुनाव जनता करती है। इसलिए, यह आवश्यक है कि जनता ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ और परोपकारी हो। यदि जनता ऐसी होगी, तो शासक भी अच्छे होंगे।